कठपुतली-कला अंतःविषयक शिक्षण-शास्त्र का एक उपकरण

———————————————————————————————————

- रिधि अग्रवाल
- राहुल अग्रवाल

ऐब्स्ट्रैक्ट

कला मानव सभ्यता की आत्मा को व्यक्त करती है। आज के लगातार बदलते-हुए परिवेश में यह ज़रूरी हैं कि बच्चों की शिक्षा में कला-शिक्षा को बार-बार परिभाषित करते रहना ज़रूरी हैं जिससे शिक्षण-प्रणाली में एक लचिलापन आ सके। मार्शल (2014) के अनुसार कला एकीकरण को एक ट्रांस-अनुशासनात्मक प्रतिमान के रूप में तैयार किया जाना चाहिए जो कि शिक्षा की वर्तमान जरूरतों को पूरा कर पाए। यह आलेख समकालीन कठपुतली के-8 शैक्षिक परियोजनाओं में शक्तिशाली कथात्मक और अंतःविषयक उपकरण का ढाँचा प्रदान करता हैं। कठपुतली की संकर प्रकृति एक व्यापक सीखने के अनुभव को बनाने के लिए विभिन्न विषयों, सीखने की शैलियों और शिक्षाशास्त्र के विलय को जोड़कर कई व्यापक अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा कठपुतली खेलने, कल्पना-शक्ति, प्रयोग करने, कहानी सुनाने और एक-दूसरे को सहयोग करने में एक अहम भूमिका अदा करती हैं। कठपुतली-प्रदर्शन बहुमुखी शैक्षणिक और सीखने के अवसर प्रदान करता हैं जैसे (1) कथात्मक शिक्षण-शास्त्र (ज़ैंडर, 2007) (2) अंतःविषयक उपकरण, और (3) बहुमुखी शैक्षणिक और सीखने के अवसर प्रदान करते हुए पाठ्यक्रम लक्ष्य को ध्यान में रखना।

इस आलेख में हम यह पता लगाएंगे कि कैसे कठपुतली विशेष रूप से के-8 शैक्षिक परियोजनाओं में परिवर्तनकारी पाठ्यक्रम दृष्टिकोण के प्रति एक अंतःविषयक शैक्षणिक उपकरण के रूप में कार्य करती है।

संदर्भ

यह आलेख सीता पुर और लखनऊ जिले के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सामुदायिक केंद्रों और स्कूलों में शिक्षार्थियों के साथ हमारे अनुभवों के आधार पर लिखा गया है। सीखने वाले *6* से *16* वर्ष की आयु के शिक्षार्थी हैं। लगभग *80%* छात्र सरकारी स्कूलों या निजी स्कूलों में पढ़ते है। बाकी *20%* बच्चे उसी गाँव के मदरसे में अध्ययन करते हैं। परिवारिंक व्यवसाय ज़्यादातर लोगों का कृषि है। महिलाएं घर के दैनिक कार्यों में लगी रहती है और बच्चों की देखभाल करती है। गांवों में, *10-12* वर्ष की आयु के युवा लड़के आजीविका के लिए सिलाई, कढ़ाई और अन्य नौकरियों की तलाश में पश्चिम भारत चले जाते हैं। तथा लड़कियों की शादी *13-14* साल की उम्र में हो जाती है। यह दुष्चक्र इसी प्रकार से चलता रहता है और समुदाय की यथास्तिथि बनाये रखता हैं। समुदाय के सदस्य अक्सर पूछते हैं *"*अगर हमारे बच्चे अध्ययन करते हैं तो क्या होगा*?* क्या उन्हें कक्षा *12* का अध्ययन करने के बाद नौकरी मिलेगी*? "*

'कला' आधारित शिक्षा क्या है?

लेख की शुरुवात में हम 'कला' शिक्षा क्या है इसकी जांच करना चाहेंगे? 'कला' शिक्षा शिल्प को पढ़ाने या दृश्य-कला बनाने तक सीमित नहीं है। बल्कि, 'कला-शिक्षा' छात्रों की 'सोच' विकसित करने में मदद करती हैं। इस आलेख में हम 'कला' शिक्षा को जाँचेंगे, विशेष रूप से, कि कठपुतली कला उच्च-स्तरीय सोच के चार-रूपों पर केंद्रित है, (ऐन.सी.एफ, 2005 में उल्लिखित) जो कला के साथ-साथ सोच और सीखने पर भी केंद्रीद है। वह चार उच्च-स्तरीय सोच हैं - तर्क, परिप्रेक्ष्य लेने, समस्या खोजने और रूपक बनाना। हम उदाहरणों के आधार पर और सिद्धांतो से जोड़ते हुए 'कला' शिक्षा उपरोक्त प्रस्तावों के निर्माण में कैसे मदद करती है इसके बारे में विस्तार से अन्वेषण करेंगे।

कला पर एक दृष्टि और कठपुतली का प्रयोग

'कला' आधारित शिक्षा के विभिन्न रूप हैं और कठपुतली उसका एक रूप है। कठपुतली एक एसी 'कला' है जिसमें एक कलाकार पहले अपने स्वयं के अनुभवों से अलग परिवेश में किसी को या किसी चीज़ को ध्यान से समझता है। इस प्रक्रिया में, कलाकार को विषय से प्राप्त ज्ञान और व्यक्तिगत अनुभवों से प्राप्त समानुभूति दोनो से निष्कर्ष निकालने पड़ते है। जैसे किताबें दुनिया की खिड़कियां हैं, वैसे ही कठपुतली भी दुनिया की खिड़कियां हैं जिनमें हम रहते हैं। दुनिया को समझने में, कलाकार और दर्शकों के बीच सहभागीता होती है।

दर्शकों के रूप में छात्रों को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती की वह प्रदर्शन के साथ साझेदारी में सीख सकते हैं। कठपुतली में दो पहलू होते हैं — एक जब शिक्षार्थी कठपुतली के प्रदर्शन के माध्यम से 'देखते हैं और सुनते हैं' (कठपुतली प्रदर्शन शिक्षक या शिक्षक द्वारा हो सकता है) या जब सीखने वाला खुद कठपुतली 'बनाने और उसके प्रदर्शन' करने में शामिल होता है।

वर्षों से हम कठपुतली पर आधारित कार्य कर रहे है और अपने काम के माध्यम से हमने स्कूलों में और स्कूल के बाद चलने वाले बच्चों के सामूहिक केंद्रों में कठपुतली-प्रदर्शन की शुरुआत की। ये कठपुतली प्रदर्शन उन शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिक कहानियों पर आधारित थे, जिन्हें गीत, संगीत और नृत्य के साथ कठपुतली के अनेक प्रकार जैसे स्ट्रिंग कठपुतली, हस्त कठपुतली तथा छड़ कठपुतली आदि के माध्यम से बनाया गया था। हमारे अनुसार कठपुतली एक विचार है, यह एक ऐसी वस्तु है जिसे एनिमेटेड किया जा सकता है और इसे कल्पना और रचनात्मकता के माध्यम से किसी भी स्तर पर ले जाया जा सकता है। बच्चे कठपुतली के साथ प्रयोग, अन्वेषण और खोज कर सकते है जिससे वह अपने आसपास और अपने भीतर के जीवन का पता लगा सकते हैं।

“कहानी बच्चों की अनुभूति के स्वरूप” के अनुसार बच्चों की संस्कृति, परी-कथाओं को देखने और सुनने तक सीमित नहीं है; बल्कि सच्चाई इसके विपरीत है – बच्चों को बात करना पसंद है, कहानियों सुनने के साथ-साथ अपनी खुद की कहानियों भी बनाना पसंद होता है।

अपने काम के शुरुआती वर्षों में, हमने कठपुतली के देखने और सुनने वाले पहलुओं पर पर बड़े पैमाने पर काम किया, लेकिन जैसे-जैसे हम उसकी गहराई में जाते रहे हमें महसूस हुआ कि कठपुतली में ‘बनाने और प्रदर्शन करने वाले’ पहलुओं में गहरा जुड़ाव (इंटर-कनेक्शन) हैं। इसलिए हम इस आलेख में कठपुतली के ‘बनाने और प्रदर्शन’ करने वाले माध्यम के उदाहरण और उनके विभिन्न पहलुओं में जुड़ाव पर प्रकाश डालेंगे।

कठपुतली एक अंतःविषयक उपकरण - ‘बनाना और प्रदर्शन करना’

आइए हम ‘अंतःविषयक’ शब्द की व्याख्या करना शुरू करते हैं। एक अंतःविषयक दृष्टिकोण दो या उस से अधिक विषयों के मिश्रित अध्ययन (सीखने की अलग-अलग शाखाएं या विशेषज्ञता के क्षेत्र) को कहते हैं, जिसमें समस्याओं को फिर से परिभाषित करने का कार्य या फिर जटिल परिस्थितियो में एक नई समझ के आधार पर समाधान तक पहुंचना कहलाता है। अंतर-विषयक या क्रॉस-डिसिपलिनरी शब्द का अर्थ एक संगठनात्मक इकाई है जिसमें दो या अधिक शैक्षणिक विषय शामिल होते हैं। यह अंतःविषयता से संबंधित है, लेकिन यह एक निश्चित प्रकार की इकाई (शैक्षणिक अनुशासन) के लिए उपयोग की जाने वाली संज्ञा है। एक क्षेत्र एक ही समय में एक विषयक और एक अंतर-विषयक हो सकता है।

कठपुतली एक महत्वपूर्ण ‘कला’ है जो कि कई विषयों पर अन्वेषण करने के लिए एक साधन प्रदान करता है और कथात्मक आवाज, सहयोग, समस्या समाधान, नवाचार और नई समझ का अनुभव करने के लिए एक संदर्भ बनाने में मदद करता हैं। कठपुतली नए दृष्टिकोणों की खोज करने का एक तरीक़ा है, जो कि मौजूदा अंतःविषयक दृष्टिकोणो को साथ में लेता हुआ मानव स्थिति को जागृत करने में एक अहम भूमिका अदा करता हैं।

अब, हम स्कूलों में एवं समुदायक केंद्रों में शिक्षार्थियों के एक समूह के साथ अपने स्वयं के अनुभवों के माध्यम से पता लगाएंगे कि कैसे एक कला के रूप में कठपुतली एक अंतःविषयक उपकरण के रूप में कार्य करती है। हम कठपुतली एक अंतःविषयक उपकरण को पांच विषयों — फ़ाउंड-ऑब्जेक्ट कठपुतली, वैज्ञानिक स्वभाव, कथात्मक विमर्श, समकालीन कला और कठपुतली कलाकारों, और मुक्त खेल अभिनय (प्रिटेंड प्ले) के द्वारा अध्यन्न करेंगे।

फ़ाउंड-ऑब्जेक्ट कठपुतली

फ़ाउंड-ऑब्जेक्ट कठपुतली में आसपास की वस्तुओं का उपयोग करके कठपुतलियों को रूप देते है और उनसे जोड़ते हुए एक कहानी का निर्माण करते है। हम फ़ाउंड -ऑब्जेक्ट कठपुतली का वातावरण क्यों बनाते हैं? इसका अन्वेषण हम प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षा में हुए उदाहरणों को देख कर करेंगे।

कठपुतली बनाने में वस्तुओं के पदार्थों का अन्वेषण करना एक अहम कार्य है जिसमें हमें वस्तुओं को समझना एवं सुनना पड़ता हैं। वस्तुएं की काल्पनिक क्षमता उनका एक पहलू हैं लेकिन उसकी असीम संभावनाओं को ढूँढना नया ज्ञान अर्जन करने के लिए अनिवार्य है। वस्तुओं को सुनने से तात्पर्य है उनको विभिन्न प्रकार से पकड़ना एवं मोड़ कर उस वस्तु की अनोखी पदार्थ क्षमताओ की खोज करना।

उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों ने कठपुतलियों को बनाने के लिए कार्ड-बोर्ड का सामग्री के रूप में अन्वेषण शुरू किया। लेकिन जब वह सावित्रीबाई फुले कठपुतली के प्रदर्शन के लिए कठपुतलियां बना रहे थे तो बस कार्ड-बोर्ड को काट कर बनाना उतना रोमांचक नहीं लग रहा था क्यूँकि उस प्रक्रिया को वह बहुत बार इस्तेमाल कर चुके थे। साथ ही कार्ड-बोर्ड की उपलब्धता सिर्फ़ शहरी क्षेत्रों तक ही प्रतिबंधित होती है।

शिक्षक (सूत्रधार) ने एक प्रश्न रखा बच्चों के सामने कि 'क्या हमारे आस-पास कोई ऐसी वस्तु है जो कठपुतलियों को अलग तरीके से बनाने में मदद कर सके'? यह सामग्री के साथ अन्वेषण की शुरुआत थी। कठपुतली बनाने वाले

विशेष रूप से प्रत्येक सामग्री के अनोखे गुणों का अनुभव करते हैं। कठपुतलियों को बनाने के लिए शिक्षार्थियों ने कागज, बांस, मकई-पत्ते, लाठी, चावल की भूसी जैसी सामग्री का अन्वेषण करना शुरू कर दिया और साथ ही कुछ वस्तुओं का भी जो परिवेश में उपलब्ध थीं जैसे झाड़ू, बाल्टी, टायर, चम्मच, जूते, कपड़े, इत्यादि।

गोड़सेन (2005) उनके निबंध में तर्क देता है की "वस्तुएं क्या चाहती हैं?" इसके लिए कठपुतली बनाने वाले को सामग्री से यह प्रश्न पूछने चाहिए: "यह क्या चाहता है?" "यह किस रास्ते पर जाना चाहता है?" "यह कौन सी कहानी बताना चाहता है?"

शिक्षार्थियों ने कागज की भौतिकता का पता लगाया (अपने पुरानी नोटबुक, पुरानी पाठ्यपुस्तकों, समाचार पत्रों, आदि से)। उन्होंने कुछ निशान बनाने, गीला करने, भिगोने, सूखाने एवं कागज की बनावट को बदलने की कोशिश की और इस अन्वेषण में वे एक बिंदु पर पहुंचे जहां उन्होंने पेपर माएशे की कठपुतलियां बनाने की प्रक्रिया को खुद से खोजा। जब वे सावित्रीबाई फुले प्रदर्शन के लिए कठपुतलियाँ बना रहे थे (इसका विवरण कथात्मक विमर्श में किया गया है) इस तकनीक का उपयोग करते हुए, उन्हें पता चला कि कठपुतली के वजन और घनत्व का संबंध सही नहीं लग रहा है , इसलिए उन्होंने इसे और अधिक भारी बनाने के लिए तालाब से कीचड़ और उसे भूसी के साथ पेपर-मैशे में मिलाया कठपुतली का वजन बदने के लिए और उसमें स्थिरता लाने के लिए । पदार्थ का आकार-प्रकार ,बनावट, वजन, आयु और घनत्व उसके दिशा और प्रवाह को निर्धारित करने की क्षमता रखता है जो प्रत्येक चरित्र को मंच पर जीवनत करता है । इस इकाई में, शिक्षार्थियों को लिटिल एंजेल थिएटर समूह के कुछ कलाकारों के काम को दिखाते हुए इस बारे में परिप्रेक्ष्य दिया गया था कि कागज कैसे सजीव (एनिमेटेड) हो सकता है, (समकालीन कला और कठपुतली कलाकारों के खंड में इसका विवरण दिया गया है)।

एक अन्य उदाहरण में कक्षा 5 के छात्रों के साथ, पुनर्उद्देशन (रीपरपसिंग) के सिद्धांत तो समझने के लिए शिक्षार्थियों को एक ऐसी वस्तु लाने को कहा गया जिस में वह पुन: ऊपयोग की क्षमता देखते है। उन्हें यह कार्य दिया गया कि उन्हें

अपनी वस्तुओं को एक व्यक्ति में बदलना होगा और उसको एक रूपक की तरह विचारना होगा ।इसके लिए शिक्षार्थियों को वस्तु की भौतिकता की खोज करते हुए उस वस्तु का व्यक्तित्व, व्यवसाय, परिवार में भूमिका के बारे में सोचना होगा और उसका एक प्रस्तुतीकरण करना होगा। इसमें शिक्षार्थियों ने पुराने जूते, सरौता, सूटकेस, बोतलें और हसिया का इस्तेमाल किया और वस्तुओं को कठपुतली के माद्ययम से चरित्र दे कर उसके जीवन की कहानी का प्रस्तुतीकरण किया। शिक्षार्थियों ने वस्तुओं के डिज़ाइन में अन्याय का भी विश्लेषण किया और पाया की सभी महिलाओं के सैंडल या चप्पल में ऊँची एड़ी के जूते थे इसलिए चप्पल ने एक कठपुतली के रूप में इस असुविधा और दर्द को दर्शाया कि जब महिलाओं को लंबे समय तक चलना पड़ाता है तो उन्हें कितनी परेशानी होती है (उनके परिवेश की यह समस्या है)। इस अन्वेषण ने समानता और भेदभाव पर चर्चा की शुरुवात कर दी ।

इस अनुभव का शिक्षार्थियों पर बहुत प्रभाव पड़ा और शिक्षक दिवस पर शिक्षार्थियों ने 'श्री फुंसुक लाल की बगिया' की कहानी पर एक कठपुतली प्रस्तुटिकरण किया, जहाँ उन्होंने फुनसुक लाल नामक पात्र को जूते और ऊन से दर्शाया। उस कहानी में एक चूहा भी था ज़िसे कैंची और हसिया द्वारा बनाया गया था।

वस्तु में पदार्थ के अन्वेषण से रासायनिक संरचना का पता लगाता है और साथ-साथ कठपुतलियों के माध्यम से रूपक सोच भी विकसित होती है जो वस्तुओं के डिजाइन में अन्याय और उनकी राजनीति के बारे में शिक्षार्थियों की सोच खोलने का मौक़ा देती। यह न केवल कल्पना और रचनात्मकता के निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है, बल्कि निर्णय लेने की दक्षताओं के निर्माण में भी काम करता है जैसे कि किस वस्तु का उपयोग करना है, कैसे उपयोग करना है। इसी तरह भाषा विकास में भी इसका योगदान है जैसे की विचार को बाहरी दुनिया से जुड़ने तथा शब्दों और शब्दावली पर निर्माण करने में।

ऐसे अनुभवों के माध्यम से शिक्षार्थि एक कठपुतली चरित्र बना सकता है जो मानव अनुभव के लिए एक रूपक है। इन अनुभवो के साथ कलाकार एक नई वास्तविकता में भी कदम रखता है, चारों ओर देखता है, यह पता लगाता है कि

यह नई वास्तविकता कैसी दिखती है, आगे बढ़ती है और उस रास्ते पर संबंध बनाती है जो बेहद रचनात्मक और कल्पनाशील हैं। शिक्षार्थी एक और 'सूक्ष्म-विश्व' में चले जाते हैं और थोड़ी देर के लिए 'सूक्ष्म-पहचान' बनाते हैं जब वे पाए गए ऑब्जेक्ट कठपुतली में होते हैं। यह प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षार्थियों की कल्पना शक्ति को बढ़ाता है और उनके विचारों में एक मंथन पैदा करता है।

वैज्ञानिक स्वभाव

परिभाषा के अनुसार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल विज्ञान विषयों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि ये मन की वो स्थिति है जो हमेशा हर बात पर तार्किक प्रश्न करती हैं;सटीक ज्ञान चाहती है और पर्याप्त सबूतों द्वारा साबित हो जाने पर ही संतुष्ट होती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्तियों को आलोचनात्मक चिंतन, तार्किकता और रचनात्मकता का कौशल प्रदान करता हैं। इसको भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51 भी मान्यता देता हैं जो यह उल्लेखित करता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और जांच और सुधारों की भावना को विकसित करना प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य हैं। एक उदाहरण में जब उच्च प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षार्थी 'लाइट एंड शैडो' पर एक अध्याय कर रहे थे, तो वे कई अवधारणाओं से जूझ रहे थे, जैसे छाया छोटी या बड़ी क्यों हो जाती हैं या प्रकाश सीधी रेखा में कैसे यात्रा करता है? शिक्षक ने शिक्षार्थियों को छाया के आधार पर कठपुतली का नाटक बनाने के लिए कहा। शुरुआत में शिक्षार्थियों को बहुत सारे भ्रम थे, जैसे कि किस तरह के पर्दे (कपड़े का प्रकार) छवियों को दर्शाने के लिए सबसे उपयुक्त होंगे, कठपुतलियों को आकार कितना बड़ा होना चाहिए और अगर हम छाया कठपुतली में रंग भी दिखाना चाहते हैं, तो हम इसे कैसे दिखा सकते हैं? पर्दे से प्रकाश स्रोत की दूरी क्या होनी चाहिए या यदि कुछ छवियों को एक ही फ्रेम में छोटा और बड़ा दोनों एक साथ होना चाहिए तो फिर हम इसे कैसे कर सकते हैं? इन सवालों पर एक एक करके काम करने के बाद शिक्षार्थियों ने अलग-अलग विकल्पों की आजमाया, विकल्पों मे बदलाव किये और अंत में वे पर्यावरण पर एक छाया कठपुतली तैयार करके आए.

जब वे फर्श पर दिन के दौरान चेहरों की छाया बना रहे थे, सवालों का एक दूसरा ही पहलु उभर कर आया — क्यों एक ही स्तिथि में भी छाया का आकार बदल जाता है? सूर्य की गति (आशय 'पृथ्वी ' से था) छाया को कैसे प्रभावित करती है? क्या दिन के दौरान 'शून्य छाया ' की संभावना है? इससे भूगोल विषय की ओर शिक्षार्थियों के अन्वेषण का आरम्भ हुआ।

छाया कठपुतली कला, रंगमंच, संगीत, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित जैसे कई विषयों को साथ में मिलाती। शिक्षार्थी कई विषयों को आपस में जोड़ते हुए सहभागिता से काम कर पाते हैं क्योंकि वे अपने ज्ञान का निर्माण एक शिक्षार्थी-केंद्रित स्थान में खेल और खोज द्वारा कर रहे होते है।

एक अन्य उदाहरण में कक्षा 4 और 5 के छात्रों के विज्ञान वर्ग में शिक्षक ने महसूस किया कि शिक्षार्थी सवाल नहीं कर रहे थे। इसने शिक्षक को छात्रों के साथ एक 'वार्तालाप सत्र' रखने के लिए प्रेरित किया। शिक्षक ने कक्षा में अंग्रेजी कहानी 'एल्मर और इंद्रधनुष' को परिवेशीय संदर्भो के आधार पर बदलाव करके उपयोग किया। कठपुतली शिक्षक से बहुत सारे सवाल पूछता हैं। इससे शिक्षार्थी भी कठपुतलियों से सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित होते हैं जैसे कि बादल कैसे बनते हैं, इंद्रधनुष कैसे निकलता है, आदि। जैसा कि पूरी प्रक्रिया जांच-आधारित है तो हम शिक्षक के रूप में कोई जवाब नहीं देते हैं. शिक्षार्थियों के साथ कठपुतली भी अपने परिवेश का अवलोकन करना शुरू करता हैं। शिक्षार्थियों ने बारीकी से निरीक्षण करना शुरू किया और पाया कि पिपरमिंट के तेल को बनाने की प्रक्रिया बादलों और बारिश के बारे में जो उन्होंने पढ़ा है उससे काफी मेल खाती हैं.

शिक्षार्थियों ने इस प्रकार से सीखने प्रक्रिया की शक्ति का एहसास किया और एक कहानी बनाई जिसे केंद्र के ही छोटे बच्चों के लिए स्ट्रिंग कठपुतलियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया ताकि उनकी जिज्ञासा को बचपन से ही विकसित और पोषित किया जा सके। इस तरह धीरे-धीरे कठपुतली शो की एक श्रृंखला जिसका नाम ' कुहू पीहू के किस्से है' नियमित रूप से होने लगी और एक 'जिज्ञासा की दीवार ' (इसका विचार एकलव्य द्वारा प्रकाशित

चकमक पत्रिका के "क्यों क्यों" वाले खंड से आया था) जहां शिक्षार्थियों को अपने जिज्ञासा के प्रश्न लगाने का मौका मिला।

लेकिन कठपुतली क्यों? शिक्षार्थियों ने खुद सोचा कि यह उन बारीकियों को लाने में मदद करेगा जो दर्शकों के मन में दृश्य चित्र बनाने में मदद करेगा, अन्यथा युवा शिक्षार्थियों के समझने के लिए यह अत्यधिक अमूर्त हो जाता है। यह छात्र की विषय की समझ का आकलन करने के लिए एक उपकरण के रूप में भी कार्य करता है कि उन्होंने उस विषय पर कैसा चिंतन और अन्वेषण किया है।

कला और विज्ञान के एकीकरण के बाद दो चीजें सामने आईं कि दोनों में घनिष्ठ अवलोकन शामिल है और चर (वेरीअबल्ज़) कारको को समझने के लिए पुनरावृत्तियों को करना महत्वपूर्ण है। एक विशेष तत्त्व को बदल कर क्या परिवर्तन आया ये देखना विज्ञान के साथ-साथ कला पर भी लागू होती है।

इसके अलावा, यह कला विशेष रूप से शिक्षक को हाथ से पकड़े गए कठपुतलियों का उपयोग करके 'अन्वेषण आधारित वार्ता' कर पाने के अधिक मौके प्रदान करता है। जब कठपुतलियों का उपयोग समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता था, तो उनकी प्रेरणा और जुड़ाव बढ़ जाता था और अधिक शिक्षार्थी अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रखने में सक्षम होते थे।

कथात्मक विमर्श

कथात्मक विमर्श, विमर्श करने का एक तरीक़े हैं जो कि अतीत में हुई घटनाओं का लेख-जोखा रखता हैं और किसी घटना के बोल या कार्य का वर्णन करते हुए अलग-अलग पहलुओं पर एक-दूसरे की निर्भरता को भी दर्शाता हैं। इस तरीक़े में विमर्श करने में एक या अधिक कलाकारों पर केंद्रित होता हैं। कथात्मक विमर्श शिक्षणशास्त्र को कई तरीकों से नियोजित किया जा सकता है — लोक कथाएँ, ऐतिहासिक घटनाएँ, पौराणिक कथाएँ, व्यक्तिगत अनुभव आदि।

जिस गाँव में हम काम करते हैं, उसमें से नाबालिग लड़की की शादी कर देने की बड़ी समस्या है। छात्र मीना (नाम बदला हुआ नाम) ने यह खुलासा किया कि जब कोई और आपके जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेता है तो बहुत घुटन भरा और असहाय-सा महसूस होता हैं। लड़की पढ़ाई करना चाहती थी लेकिन पारिवारिक दबाव के कारण उसकी शादी कक्षा 8 पास करने के बाद हो गई। अन्य लड़कियों के साथ भी ऐसा ही हुआ। इस स्थिति में, कभी-कभी माता-पिता और समुदाय से बात करना निरर्थक होता है। इस स्थिति में किसी को क्या करना चाहिए?

बच्चों को विभिन्न क्रांतिकारी लेखकों जैसे कि इस्मत चुगई, फैज़ अहमद फैज़, सफ़र हाशमी के ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ कठपुतलियों का उपयोग करते हुए कहानियों, कविताओं और गीतों के साथ संपर्क में लाया गया। दुनिया भर में होने वाले सकारात्मक कार्यकर्ता आंदोलनों की ऐसी पृष्ठभूमि के साथ, गांव के बच्चे भी अपने अधिकारों के लिए अपनी आवाज उठाने के लिए सोचने लगे। लेकिन, इसे गाँव में कैसे प्रदर्शित किया जाए?

सभी मिलकर इस बात पर मनन-चिंतन करते हैं कि हम लोग ही तो कहानी सुनाने वाले प्राणी हैं, और यह उन क्रांतिकारियों की कहानियों के माध्यम से है, जिन्हें हम साझा करते हैं, कि हम खुद को और अपने सामाजिक परिदृश्य को एक स्वरूप देते हैं। अपनी आवाज उठाने की आवश्यकता महसूस करने के बावजूद उन्होंने अभी भी अपने समुदाय के सदस्यों से खुलकर सवाल करने का साहस नहीं था, इसलिए उन्हें इस विचार पर आना पड़ा, जिसमें समुदाय में प्रश्न को जीवित रखने की आवश्यकता थी। साथ ही इस बात से भी सतर्क रहना था कि किसी लड़की या उसके परिवार को विरोधी सदस्य निशाना न बनाए।

तभी यहाँ पर कथात्मक विमर्श और शिक्षणशास्त्र में कठपुतलियों की भूमिका नज़र आती है, ख़ासकर पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में, जिसने इन सवालों को आवाज़ देने के लिए कठपुतलियों को एक 'टॉकिंग टूल' के रूप में देखा।

बुनियादी कठपुतलियाँ वर्तमान सामाजिक मुद्दों को आवाज़ देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हैं (अशर, 2009)। इसी कथन से मार्ग लेते हुए छात्रों ने जब सावित्रीबाई फुले, ज्योतिबा फुले और फातिमा शेख की कहानी के बारे में पढ़ा तो उन्होंने जाना कि कैसे उन्होंने यथास्थिति पर सवाल उठाया, रूढ़ियों को चुनौती दी और सही समय पर जवाब भी दिया। उन्होंने किसी के साथ ग़ुस्से से या गुमनाम होकर नहीं बल्कि अपने अधिकारों के लिए खड़े होने के लिए अपना रुख अपनाया। इन सबकी कहानियों और कार्य से प्रभावित होकर छात्रों ने जाति, धर्म और लिंग के विचारों पर एक नाटकीय प्रदर्शन में कठपुतली को भी जोड़ा जिससे संवाद और विमर्श की जगह बन पाई।

एक अन्य उदाहरण में 'आफ़्टर स्कूल लर्निंग सेंटर' के लगभग 8-10 वर्ष की आयु के शिक्षार्थियों ने प्रासंगिक सामग्री, विचारों, और छाया कठपुतली के माध्यम से सफ़दर हाशमी की कविताओं को दर्शाया। यह देखना काफ़ी रोमांचक था कि कैसे शिक्षार्थियों ने इन कविताओं को स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल करते हुए जैसे टहनियाहों, ईंटों, और 'पॉप-अप' पुस्तकों के माध्यम से दर्शाया। शिक्षार्थियों ने सबसे पहले तो कविता को समझा और फिर अलग-अलग कला रूपों जैसे 'पॉप-अप' किताबें, प्रत्यक्षीकरण निरूपण (विज़ूअल रेप्रेज़ेंटेशन) के माध्यम से चित्रण करने की कोशिश की जिसमें कथात्मक विमर्श को कला-प्रदर्शन से जोड़ने का प्रयास किया गया।

कठपुतली-प्रदर्शन एक अंतर-विषयक उपकरण के रूप में से एक है जिसमें समाजशास्त्र (जैसे विभिन्न विषयों जो जाति, लिंग, धर्म को समझने की कोशिश करते है), इतिहास (एक तरफ समुदाय की परंपराएं और दूसरी तरफ क्रांतिकारी विचारकों और लेखकों का इतिहास) और कठपुतली के माध्यम से एक नाटकीय प्रदर्शन जो कि कला की परिवर्तनकारी शक्ति को बाहर लाने में मदद करता हैं और आसपास के गहरे सामाजिक और शैक्षिक प्रश्नों के साथ निरंतर प्रतिच्छेद करता रहता है। यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के पाठयक्रम लक्ष्यों के साथ भी मेल खाता है, जिसमें शिक्षा को आस-पास के जीवन के साथ जोड़ना ज़रूरी हैं यानी हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन की चुनौतियों और उनके सवालों के साथ।

समकालीन कला और कठपुतली कलाकारों

सिस्टम मॉडल ऑफ़ क्रिएटिविटी (Csiksgentmihalyi, 1999) के अनुसार, शिक्षार्थी अन्य रचनाकारों और उनके कार्यों से ज्ञान और प्रेरणा प्राप्त करके रचनात्मकता की सामाजिक प्रणाली में भाग ले सकते हैं. यह कला को बनाने के बजाय कला को देखने और उसकी व्याख्या करने पर केंद्रित है, और इसके दोहरे लक्ष्य हैं: शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जा रहे विषयों और कला के बीच समृद्ध संबंध बनाने में मदद करने के लिए; और विकासशील छात्रों के मनन-चिंतन के लिए कला की शक्ति का उपयोग एक बल के रूप में करने के लिए'।

एक कलाकृति जिससे शिक्षा र्थियों को अवगत कराया गया वो था — कैबरे मैकेनिकल थियेटर, जो 1982 में स्थापित समकालीन ऑटोमेटा का एक संग्रह है। इनकी दुनिया भर में स्थायी और अस्थायी प्रदर्शनियां स्थापित हैं। उनका उद्देश्य आगंतुकों, निर्माताओं और संग्रहकर्ताओं का मनोरंजन करना और प्रेरणा देना हैं। शिक्षार्थियों को कैबरे मैकेनिकल थियेटर से अवगत कराया गया और उन्होंने ऑटोमेटा और अन्य कल पुर्जो के कार्यो की अवधारणाओं को समझा. चूंकि उनके पास कठपुतली का ज्ञान भी था, तो वे सोच रहे थे कि कठपुतली में या अन्य संदर्भो में भी इसे लागू किया जा सकता है क्या।

शिक्षार्थियों ने कैबरे मैकेनिकल थियेटर के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया और दृश्य छवियों की व्याख्या सोच-समझकर, गंभीर और रचनात्मक रूप से की. उदाहरण के लिए, एक छवि थी जिसमें एक कठपुतली एक स्टूल पर बैठी पेंसिल से ड्राइंग कर रही थी और कागज को एक डेस्क पर रखा गया था. तो, प्रश्न शिक्षार्थियों ने व्याख्या की कि यह कौन सा जानवर हो सकता है? एक जानवर ड्राइंग क्यों बना रहा था? इन सवालों के माध्यम से शिक्षार्थी ने उस ऑटोमेटा कठपुतली के टुकड़े को बनाते हुए कलाकार की विचार प्रक्रिया की व्याख्या की.

उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षार्थी (विद्यार्थी) स्वयं ही तर्कों द्वारा विभिन्न डोमेन में मैकेनिकल थियेटर की उपयोगिता के बार में अपना दृष्टिकोण बना रहे थे। उनके ज्ञान को और बढ़ाने के लिए ऑटोमेटा पर सत्र लेने के लिए

एक मैकेनिकल इंजीनियर को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने महसूस किया कि बहुत से खिलौनो की रचना और उत्पादन में, यांत्रिक और ऑटोमेटा की विशेषताओं को एकीकृत किया जा सकता है। उन्होंने विभिन्न प्रकार के कठपुतलियो (हाथो से चलने वाली कठपुतलिया, डोरी आधारित कठपुतलिया) को बनाने में इसे सफलतापूर्वक लागू भी किया और अंत में एक कठपुतली का नाटक तैयार किया।

एक अन्य उदाहरण में शिक्षार्थियों ने लिटिल एंजेल थिएटर के कलाकारों की टुकड़ी द्वारा 'पेपर स्टोरी' नामक एक ऑनलाइन कठपुतली कार्यक्रम का विश्लेषण किया। यह विशेष रूप से उन अन्वेषणों से जुड़ा था जो शिक्षार्थी फ़ाउंड-ऑब्जेक्ट कठपुतली कठपुतली विषय में कर रहे थे। शिक्षार्थियों ने आंदोलन, अभिव्यक्ति और भावनाओं को व्यक्त करने में एक कागज़ के इस्तेमाल की विभिन्न संभावनाओं को देखा।

एक तरफ तो ऑटोमेटा के पीछे एक वैज्ञानिक सिद्धांत है, लेकिन हमे यह भी याद रखना है कि हम उसको कला की दृष्टि से भी देख सकते हैं । इसलिए, कला में तर्क और विज्ञान में तर्क के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है, जैसा कि कला में, अक्सर एक भी व्याख्या सही एवं पूर्ण व्याख्या नहीं होती है. तो जब एक कलाकृति की कई व्याख्याएं होंगी, तब शिक्षक के लिए ये चुनौतीपूर्ण रहेगा की वो शिक्षार्थियों तक ले जाने के लिए कोई कलाकृति किन आधारों पर चुने।

मुक्त खेल अभिनय (प्रिटेंड प्ले)

खेल बच्चों के जीवन का एक अभिन्न अंग है। बच्चे प्रिटेंड प्ले क्यों करते हैं? हम सभी ने देखा होगा कि ख़ासकर छोटे बच्चे प्रिटेंड प्ले से काल्पनिक कहानियां बनाते हैं, जैसे बचाव अभियानों में, या फिर जानवर बन जाते हैं या फिर जानवरों की आवाज़ निकालते हैं जो कि वास्तविक नहीं है, लेकिन बच्चा पूरी तरह से उस कल्पना में डूब जाता है जो उसके लिए एक वास्तविकता है। बच्चों की प्रिटेंड प्ले की नीव उनकी कल्पना-शक्ति होती हैं और उसमें दुनिया की अनावृत्ति, पूछताछ और समझ से वृधि होती हैं।

बच्चे अपने प्रिटेंड प्ले में कुछ वस्तुएँ, ख़िलोने, चीज़ें या लेखों का भी इस्तेमाल करते हैं, जिसको वो अपनी कल्पना-शक्ति से वो कुछ भी माल लेते हैं, जैसे कि एक छोटी सी छड़ी को भी हवाई जहाज़ मान लेते हैं। इसके लिए अनुकूल वातावरण ज़रूरी हैं जहां रचनात्मकता और कल्पना खिल पाए। इस वातावरण को प्राथमिक कक्षाओं में लाने के लिए हमारे समूह ने प्रसिद्ध कहनीयों पर कठपुतली-प्रदर्शन करना शुरु किया। उदाहरण-स्वरूप हमने विशाल कठपुलीयों के द्वारा 'झाड़ू-झड़ाई' का प्रदर्शन किया जो कि एक प्रसिद्ध कहानी 'द रूम आन द ब्रूम' पर आधारित हैं, जिसकी लेखिका जूलिया डॉनल्ड्सॉन हैं।

यह देखना आकर्षक था कि जब वे कठपुतली का प्रदर्शन देख रहे थे, तो कहानी में वे अपने आप को एक चुड़ैल या मेंढक जैसे कुछ पात्रों में अपने-आप को ढाल चुके थे और बच्चे गाने के बोल बिना पूर्व-अभ्यास के दोहरा रहे थे। बच्चों ने इसी कहानी की कठपुलीयों से प्रिटेंड प्ले किया जिसमें बच्चे उस कहानी के गीत, बोल आदि गुनगुना रहे थे। उन्होंने सहभागिता से कहानी में नए क़िस्से जोड़ते हुए कहानी को एक नया मोड़ भी दे दिया। इन सभी प्रक्रियाओं में अक्सर कक्षाओं में शोर-गुल बढ़ जाता हैं या फिर बच्चे आपस में झगड़ने लगते हैं, लेकिन इस कला की यही ख़ूबसूरती हैं कि बच्चे इस कला की रचनात्मकता में इस तरह डूबे हुए थे कि केवल गीत के बोल की मधुर धुन ही कक्षा में गूँज रही थी।

एक और उदाहरण में जिसमें छोटे व बड़े बच्चों ने 'गिल्लु का पिटारा' कहानी पर कठपुतली-प्रदर्शन द्वारा देखा कि कैसे एक बच्चा गिल्लु जो की काफ़ी जुगाड़ु हैं, समुदाय के कभी लोगों की दिक़्क़तों का परवेश की सामग्री से नवीन हल निकालकर उन सभी की मदद करता हैं। इस कठपुतली-प्रदर्शन को देखकर ख़ासकर छोटे बच्चे अपने आप को समुदाय का 'गिल्लु' समझते हुए सभी लोगों की मदद करने लगे। यह प्रिटेंड प्ले वैज्ञानिक दृष्टिकोण बनाने में भी मदद करता हैं। इस प्रक्रिया में यह भी देखा कि बच्चे अपने संदर्भ की चीज़ों का ज्ञान बड़ी बख़ूबी से इस अन्वेषण में लगा रहे थे।

एक विशेष बात यह हैं कि प्रिटेंड प्ले के द्वारा बच्चे अपने विचारों के साथ परस्पर मंथन भी करते हैं। साथ ही में कई मनोविज्ञानिको (वाइगोत्सकी, लूरिया, प्याज़े, ब्रूनर) ने भाषा और विचारों के परस्पराधीनता पर काफ़ी लिखा हैं कि कैसे भाषा

बाल-विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और कैसे भाषा एक व्यक्ति के लिए नए अनुभव और अनुभूति करने की सम्भावनाएँ खोलती हैं।

सारांश

कठपुतली वास्तव में अंतःविषयक है क्योंकि यह बच्चों के खेलने की एक वस्तु से लेकर जटिल वैज्ञानिक घटना की समझ से लेकर समुदायों में सामाजिक अन्याय पर आवाज़ उठाने से लेकर विचार और भाषा प्रक्रियाएं बनाने में एक अहम भूमिका निभाती हैं। यह एक अत्यंत शक्तिशाली कला रूप है जो कि प्रत्यक्षीकरण, नाटकीय, प्रदर्शन-आधारित और दृष्टिकोण और व्याख्याओं के लिए खुला है। यह एक बहुपद्धति दृष्टिकोण हैं जो विभिन्न पहलुओं को एकीकृत करता हैं। जैसा कि सभी कला-रूप सभी उम्र के लोगों के लिए होते हैं, निश्चित रूप से यह सिद्धांत कठपुतली के लिए भी सही है।

लेकिन, यह भी एक तथ्य है कि एक कला के रूप में कठपुतली का प्रचलन दुनिया भर में घट रहा है और कठपुतली के कई पारंपरिक रूप विलुप्त होने के कगार पर हैं। यह एकीकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है, लेकिन जटिल प्रक्रियाओं, अनुकूलित सामग्री और सोच-जटिलता के कारण कक्षाओं में शायद ही लाया जाता है। इस आलेख के माध्यम से हम पाठकों, शिक्षकों, श्रोताओं और हमारे सभी देशवासियों से गुज़ारिश करते हैं कि सीखने के मूल में कला-रूपों को लाना और कला के विमर्श को महत्व देना आज के समय में अत्यंत आवश्यक हैं जिससे आने वाली पीढ़ियां कठपुतली की प्रणालीगत प्रक्रियाओं की शक्तियों को पहचान सकें।

संदर्भ:

1. *The Artworks for School curriculum was developed by Project Zero in collaboration with Underground Railway Theater and DeCordova Museum*
2. *Kroger, T. Nupponen, A.M. Puppetry as a Pedagogical Tool : A Literature Review. International Electronic Journal of Elementary Education*
3. *Romanski, N.M. Reigniting the Transformative Power of Puppets Through Narrative Pedagogy, Contemporary Art, and Transdisciplinary Approaches in Art Education. Routledge Taylor & Francis Group*
4. *Keogh, B. Naylor, S. Maloney, J. Simon, S. Puppets and engagement in science : a case study*
5. *Shams-Zandjani, M.M. An Examination of Children's Senses, the Damaging Effect of the Media and the Therapeutic Possibilities of Puppetry*
6. *Kent, L. Working with things : An exploration of materiality in the puppet theatre. Garland Magazine The stories behind what we make*
7. *Lepley, A.N. How Puppetry Helps the Oral Language Development of Language Minority Kindergartners*
8. *https://www.sciencedirect.com/topics/earth-and-planetary-sciences/interdisciplinary-approach*
9. *https://glossary.sil.org/term/narrative-discourse*
10. *https://cabaret.co.uk*

रिधि अग्रवाल स्वतंत्र तालीम नामक संस्था की सह-संस्थापक हैं। रिधि संस्था में एक शिक्षक की भूमिका तो निभाती ही हैं साथ ही में बच्चों के साथ कठपुतली बनाना और उसे बच्चों के बीच में रोचक तरीक़े से ले जाने में काफ़ी प्रोत्साहित रहती हैं। उन्होंने टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से शिक्षा में स्नातकोत्तर और लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय से स्नातक किया हैं। स्वतंत्र तालीम शुरू करने से पहले उन्होंने द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया (दिल्ली) और सह्याद्री स्कूल (केएफआई इंडिया) में भी काम किया हैं। वह दस वर्षों से अधिक समय से भाषा, विज्ञान और गणित पर परिवेशीय शिक्षण अधिगम सामग्री को विकसित करने के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। वह पहली भारतीय हैं जिसे कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क के द्वारा 'फैबलर्न फैलोशिप' से सम्मानित किया गया है। उन्हें ridhi@swatantratalim.org पर सम्पर्क कर सकते हैं।

राहुल अग्रवाल स्वतंत्र तालीम नामक संस्था के सह-संस्थापक हैं। स्वतंत्र तालीम शुरू करने से पहले उन्होंने पेप्सिको इंडिया, भारती एयरटेल और सह्याद्री स्कूल (केएफआई इंडिया) में भी काम किया हैं। राहुल एक चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं और उन्होंने टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से शिक्षा में स्नातकोत्तर और श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से स्नातक किया हैं। पिछले दस वर्षों से ज़मीनी तौर पर ग्रामीण और सरकारी स्कूलों में शिक्षण-शास्त्र को ज़्यादा से ज़्यादा अंत:विषयक बनाने के लिए अध्यन्न भी कर रहे हैं। उनकी विशेष रूचि समाज-शास्त्र के उन बिंदुओ में हैं जो शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं या फिर उनसे प्रभावित होते हैं। उन्हें rahul@swatantratalim.org पर सम्पर्क कर सकते हैं।